अमृत प्रार्थना
भगवान से

हे प्रभु! हे अंतर्यामी! जगत में ऐसा देखा जाता है कि यदि कोई पशु झाड़ियों में फँसा हो, मार्ग से कोई व्यक्ति निकल रहा हो,जब उस फँसे हुए पशु को वह देखता है,तो उसके मन में दया आ जाती है। जबकि वह पशु उसका अपना नहीं है, लेकिन फिर भी वह उस पशु को निकालने का प्रयत्न करता है। स्वयं उन झाड़ियों में जाता है ।उसके शरीर पर भी काँटे लग जाते हैं, लेकिन फिर भी वह उस झाड़ी से उस पशु को निकाल लेता है। उसे स्वतंत्र कर देता है, मुक्त कर देता है।
यह सामान्य जीव,सामान्य मनुष्य की बात है कि वह अपने ना कहलाने वाले पशु पर भी दयावान हो जाता है।
संसार के जितने भी प्राणी हैं,यदि उनकी दया को समेटकर इकट्ठा किया जाए ,तो भी वह आप की दया से अंश मात्र भी नहीं होगा। ऐसे आप परम दयालु और परम कृपालु हैं।
आप दया सिंधु हैं। हम सब भी इस संसार रुपी झाड़ियों में फंसे हुए हैं।
निकलना चाहते हैं लेकिन हम निकल नहीं पा रहे हैं और इस झाड़ियों में कांटे जो हमारे शरीर को, हमारे मन-बुद्धि- चित्त को क्षुब्ध कर रहे हैं ,पीड़ा पहुंचा रहे हैं ।
हे प्रभु! आपने मौन क्यों धारण किया है?
जब एक सामान्य मनुष्य,एक पशु को देखकर दयावान हो जाता है तो आपको दया क्यों नहीं आ रही है?
आप तो दया सिंधु कहलाते हैं।
सुना है भगवती द्रौपदी की एक पुकार पर आप दौड़े चले आए थे। सुना है आपने गजराज की पुकार पर, उसे ग्राह से मुक्त किया था।
अब हम लोगों की बारी है! हम लोग भी उसी प्रकार इस संसार रुपी झाड़ियों में फँसे हुए हैं।
हे प्रभु! आप आए! और हमारी भी रक्षा करें?
हमें इससे मुक्त करें! हमारा उद्धार करें!
ओम शांति शांति शांति!